



CARMEL COLLEGE OF ARTS, SCIENCE AND COMMERCE FOR WOMEN

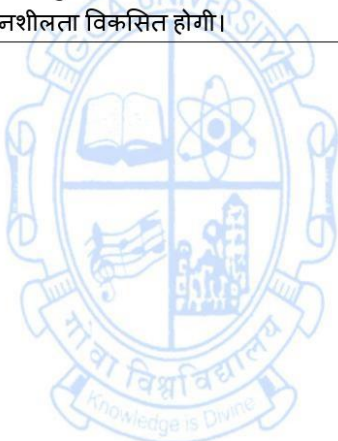
Nuvem, Salcete, Goa.

DEPARTMENT OF HINDI

कार्यक्रम	: स्नातक हिंदी
पाठ्यक्रम	: HIN-100
पाठ्यक्रम का शीर्षक	: हिंदी कहानी साहित्य: परिचयात्मक अध्ययन (Hindi Story Literature: Introductory Study)
श्रेयांक	: 04
शैक्षिक वर्ष से लागू	: 2023-24

पाठ्यक्रम के लिए पूर्वपेक्षित	हिंदी भाषा की सामान्य जानकारी अपेक्षित है।	
उद्देश्य	1. हिंदी कहानी के प्रति रुचि बढ़ाना। 2. कहानी साहित्य की अवधारणा और स्वरूप से अवगत कराना। 3. हिंदी कहानीकारों तथा उनकी कहानियों से परिचित कराना। 4. श्रवण, पठन और लेखन क्षमताओं को विकसित करना।	
पाठ्य विषय		घंटे
	1. कहानी : अवधारणा एवं स्वरूप • हिंदी के प्रमुख कहानीकार : सामान्य परिचय आचार्यरामचन्द्र शुक्ल, प्रेमचंद, जयशंकर प्रसाद, अज्ञेय, यशपाल, फणीश्वरनाथ रेणु, मोहन राकेश, राजेंद्र यादव, कमलेश्वर, निर्मल वर्मा, उषा प्रियंवदा, जानरंजन, सूर्यबाला, उदय प्रकाश, गिरिराज किशोर।	15
	2. प्रेमचंद पूर्व और प्रेमचंद युगीन कहानी • ग्यारह वर्ष का समय- आचार्य रामचन्द्र शुक्ल • पूस की रात- प्रेमचंद • पुरस्कार- जयशंकर प्रसाद • कवि का प्रायश्चित्त- सुदर्शन	15
	3. प्रेमचंदोत्तर कहानी • पंचलाइट- फणीश्वरनाथ रेणु • वारिस- मोहन राकेश • मेहमान- राजेन्द्र यादव • कसबे का आदमी- कमलेश्वर	15
	4. समकालीन कहानी • भाग्यरेखा- भीष्म साहनी • हंसा जाई अकेला- मार्कण्डेय • यहीं तक- राजी सेठ • अब उठूंगी राख से- जया जादवानी	15
अध्यापन पद्धति	अतिथि व्याख्यान, चर्चा, कार्यशाला, दृश्य श्रव्य प्रस्तुतीकरण, व्यावहारिक प्रयोग, अध्ययन भ्रमण	

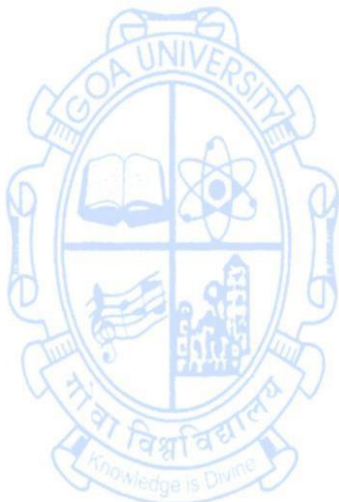
संदर्भ ग्रंथ सूची	1. श्रीवास्तव, परमानन्द, हिंदी कहानी की रचना-प्रक्रिया, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2012 2. त्रिपाठी, विश्वनाथ, कुछ कहानियाँ : कुछ विचार, राजकमल प्रकाशन, दरियागंज, दिल्ली, 2015 3. मधुरेश, हिंदी कहानी का विकास, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2014 4. मिश्र, रामदरश, हिंदी कहानी : अंतरंग पहचान, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2014 5. राय, गोपाल, हिंदी कहानी का इतिहास, राजकमल प्रकाशन, दरियागंज, दिल्ली, 2016 6. शर्मा, रामविलास, प्रेमचंद और उनका युग, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 2016
अधिगम परिणाम	1. हिंदी कहानी के प्रति रुचि बढ़ेगी। 2. कहानी की अवधारणा और स्वरूप से परिचित होंगे। 3. हिंदी के प्रमुख कहानीकार तथा उनकी कहानियों से अवगत हो सकेंगे। 4. सृजनशीलता विकसित होगी।



कार्यक्रम : स्नातकहिंदी
पाठ्यक्रम : HIN-111
पाठ्यक्रम का शीर्षक : हिंदी नाट्य साहित्य: परिचयात्मक अध्ययन
(Hindi Drama Literature: Introductory Study)
श्रेयांक : 04 (60)
शैक्षणिक वर्ष से लागू : 2023-24

पाठ्यक्रम के लिए पूर्वापेक्षित	हिंदी साहित्य का परिचयात्मक ज्ञान होना अपेक्षित है।	
उद्देश्य	1. आधुनिक नाटक के प्रति रुचि जागृत करना। 2. हिंदी नाटक का अध्ययन करना। 3. हिंदी नाटक की प्रक्रिया तथा प्रवृत्तियों का विवेचन तथा विश्लेषण करना। 4. रचना के माध्यम से मानवीय मूल्यों को विकसित करना।	
पाठ्यविषय	1. नाटक : अवधारणा एवं स्वरूप	घंटे 15
	● नाटक के तत्व ● प्रमुख हिंदी नाटककार : सामान्य परिचय ● भारतेंदु हरिश्चंद्र, जयशंकर प्रसाद, उपेन्द्रनाथ अशक, धर्मवीर भारती, लक्ष्मीनारायण लाल, मोहन राकेश, सुरेंद्र वर्मा, शंकर शेष, मणि मधुकर, हबीब तनवीर, असगर वजाहत, मीरा कांत	15
	2. स्वतंत्रतापूर्व हिंदी नाटक	15
	● छठा बेटा – उपेन्द्रनाथ अशक	15
	3. स्वातंत्र्योत्तर हिंदी नाटक	15
संदर्भग्रंथसूची	● बकरी - सर्वेश्वरदयाल सक्सेना	15
	4. 21वीं सदी का हिंदी नाटक	15
अध्यापनविधि	व्याख्यान, सामूहिक चर्चा, संगोष्ठी, दृश्य-श्रव्य प्रस्तुति, कार्यशाला	
	आधार ग्रंथ	
संदर्भग्रंथसूची	1. अशक, उपेन्द्रनाथ-छठा बेटा, नीलाभ प्रकाशन, इलाहाबाद, 1940 2. बब्बर, नादिरा जहिर – सकुबाई, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2008 3. सक्सेना, सर्वेश्वरदयाल -बकरी, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, 1974	
	1. ओझा, दशरथ, हिंदी नाटक : उद्भव और विकास, राजपाल प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2017 2. चातक, गोविंद, हिंदी नाटक : इतिहास के सोपान, तक्षशिला प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2002 3. रस्तोगी, गिरिश, बीसवीं शताब्दी का हिंदी नाटक और रंगमंच, ज्ञानपीठ प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2018	

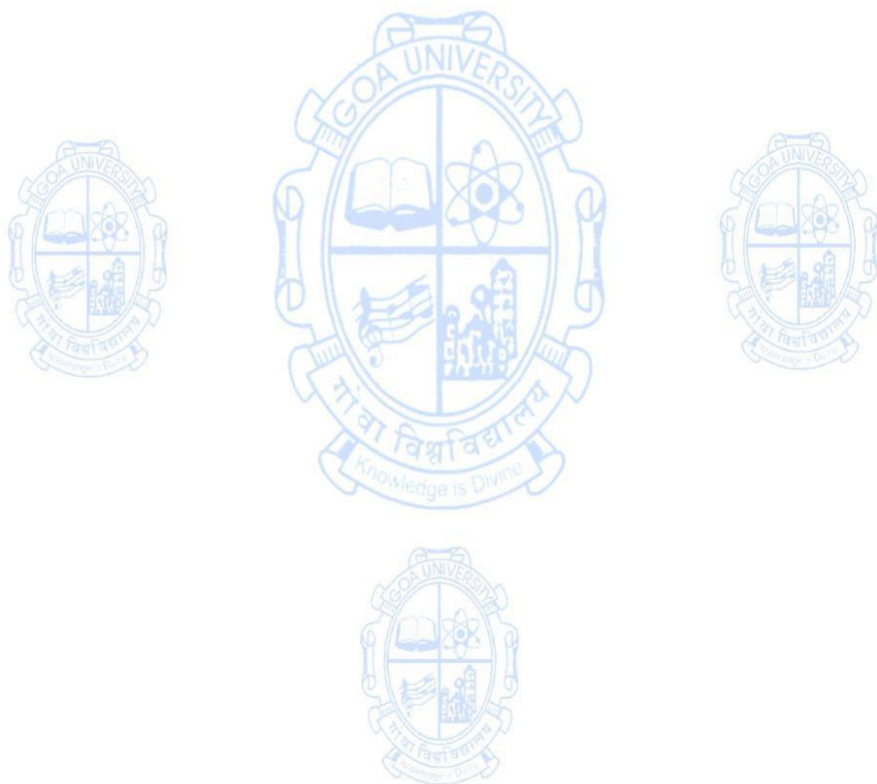
	4. तनेजा, जयदेव, समकालीन हिंदी नाटक और रंगमंच, तक्षशिला प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2002 5. तनेजा, जयदेव, हिंदी नाटक : आज तक, तक्षशिला प्रकाशन, नयी दिल्ली,
अधिगमपरिणाम	1. हिंदी नाट्य साहित्य के प्रति रुचि जागृत होगी। 2. हिंदी नाटक की प्रवृत्तियों का विवेचन तथा विश्लेषण कर सकेंगे। 3. चयनित नाटकों का अध्ययन एवं विश्लेषण कर सकेंगे। 4. रचना के माध्यम से मानवीय मूल्यों से परिचित होंगे।



कार्यक्रम : स्नातक हिंदी
 पाठ्यक्रम : HIN-141
 पाठ्यक्रम का शीर्षक : वृत्तचित्र लेखन एवं निर्माण (Documentary writing & Production)
 श्रेयांक : 03
 शैक्षिक वर्ष से लागू : 2023-24

पाठ्यक्रम के लिए पूर्वापेक्षित	वृत्तचित्र में रुचि होना आवश्यक है।	
उद्देश्य	1. वृत्तचित्र की अवधारणा एवं स्वरूप से परिचित करना। 2. वृत्तचित्र का व्यावहारिक ज्ञान देना। 3. वृत्तचित्र की प्रक्रिया को समझाना। 4. वृत्तचित्र का निर्माण कराना।	
पाठ्य विषय	1. वृत्तचित्र लेखन	घंटे 15
	• अवधारणा, स्वरूप, एवं महत्व। • वृत्तचित्र लेखन परंपरा। • वृत्तचित्र लेखन के प्रकार	
	2. वृत्तचित्र निर्माण: व्यावहारिक प्रयोग • विषय निर्धारण • विषय के अनुसार स्क्रिप्ट लेखन • पात्र संयोजन • शूटिंग सारणी • संकलन • वॉयसओवर • संगीत • कैमेरा का संचालन	30
	3. वृत्तचित्र निर्माण: व्यावहारिक प्रयोग • किसी एक विषय पर दस मिनट का वृत्तचित्र निर्माण एवं प्रस्तुति।	30
अध्यापन विधि	व्याख्यान, सामूहिक चर्चा, कार्यशाला, संगोष्ठी, दृश्य-श्रव्य प्रस्तुति, स्टुडिओ।	
संदर्भ ग्रंथ सूची	1. मिश्र, डॉ चंद्रप्रकाश, मीडिया लेखन – सिद्धांत और व्यवहार, संजय प्रकाशन, नई दिल्ली भारत, 2013 2. डॉ राहुल भदाणे, मीडिया लेखन, प्रशांत प्रकाशन, 3- प्रताप नगर, ज्ञानेश्वरमार्ग, जलगांव- 425001, 2020 3. सुशील गौतम, वृत्तचित्र लेखन एवं फिल्म तकनीक, Publication Division Ministry of I & B, 2016	

	4. प्रो. सूर्यप्रसाद दीक्षित, डॉ पवन अग्रवाल, मीडिया लेखन –कला, वाल्मिकी मार्ग, लखनऊ , 226001 न्यू रॉयल बुक कंपनी. 5. रवींद्र कात्यायन, मीडिया लेखन एवं फिल्म विमर्श, साहित्य संस्थान, गाजियाबाद -201102, 2018 6. मुकुल श्रीवास्तव, सूचना, संचार और समाचार, वाल्मिकी मार्ग, लखनऊ , 226001 न्यू रॉयल बुक कंपनी.
अधिगम परिणाम	1. वृत्तचित्र की अवधारणा एवं स्वरूप से परिचित होंगे। 2. वृत्तचित्र की रचनात्मक अंतर्दृष्टि को समझेंगे। 3. वृत्तचित्र निर्माण की प्रक्रिया से अवगत होंगे। 4. वृत्तचित्र के विभिन्न दृष्टिकोणों से परिचित होंगे।



कार्यक्रम: : स्नातक हिंदी
 पाठ्यक्रम : HIN-142
 पाठ्यक्रम का शीर्षक : समाचार लेखन एवं प्रस्तुतीकरण (News Writing & Presentation)
 श्रेयांक: : 03 (1 Theory +2 Practical)
 शैक्षिक वर्ष से लागू : 2023-24

पाठ्यक्रम के लिए पूर्वापेक्षित	पत्रकारिता में रुचि होना आवश्यक है।	
उद्देश्य	1. समाचार संकलन की अवधारणा से परिचित कराना । 2. समाचार संकलन एवं लेखन के सैद्धांतिक पक्ष से अवगत कराना। 3. समाचार लेखन संबंधी विभिन्न माध्यमों का प्रशिक्षण देना। 4. संचार माध्यमों के लिए समाचार लेखन एवं प्रस्तुतीकरण में सक्षम बनाना।	
पाठ्य विषय		घंटे
	1. समाचार संकलन : - समाचार लेखन : संकल्पना एवं स्वरूप (तत्व और प्रकार) - मुद्रित और इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों के समाचार : विशेषताएं एवं अंतर - समाचारों के विभिन्न स्रोत - समाचार-लेखन प्रक्रिया (मुद्रित एवं इलेक्ट्रॉनिक)	15
	2. मुद्रित समाचार लेखन एवं प्रस्तुतीकरण - मुद्रित समाचार आलेखन - पूर्णकालिक, अंशकालिक एवं फ्रीलांसर स्वरूप में समाचार लेखन - सम्पादन - समाचार संस्थानों को भेंट	30
	3. मुद्रित-इलेक्ट्रॉनिक समाचार लेखन एवं प्रस्तुतीकरण - रेडियो समाचार लेखन – संकलन -सम्पादन, अनुवाद , बुलेटिन निर्माण एवं प्रस्तुति - दूरदर्शन समाचार लेखन, सम्पादन, अनुवाद एवं प्रस्तुति	30
अध्यापन विधि	व्याख्यान, अतिथि व्याख्यान, सामूहिक चर्चा, दृक्श्राव्य प्रस्तुति, समाचार पत्र के दफ्तर, आकाशवाणी केंद्र, दूरदर्शन केंद्र, या अन्य चैनल के केंद्र को भेंट, प्रत्यक्ष समाचार लेखन ।	
संदर्भ ग्रंथ सूची	1. अग्रवाल, सुरेश : जनसंचार माध्यम, नमन प्रकाशन दिल्ली, 2005 2. हरिमोहन: समाचार फीचर लेखन एवं संपादन कला अकादमिक प्रतिभा, दिल्ली, 2003 3. पंत, एन सी.: मीडिया लेखन के सिद्धांत, जवाहर पुस्तकालय मथुरा, 2009	
अधिगम परिणाम	1. समाचार संकलन की अवधारणा से परिचित होंगे। 2. समाचार संकलन एवं लेखन के सैद्धांतिक पक्ष से अवगत होंगे।	

सत्र : III

कार्यक्रम : स्नातक हिंदी

पाठ्यक्रम : HIN-200

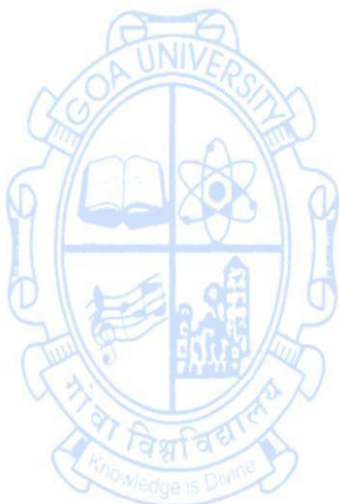
पाठ्यक्रम का शीर्षक : हिंदी गद्य: कथा साहित्य एवं एकांकी
(Hindi Prose: Stories, Novel and One Act Play)

श्रेयांक : 04

शैक्षणिक वर्ष से लागू : 2024-25

पाठ्यक्रम के लिए पूर्वापेक्षित	हिंदी साहित्य का सामान्य ज्ञान होना अपेक्षित है।	
उद्देश्य	1. गद्य साहित्य के आरंभिक इतिहास से परिचित कराना। 2. कहानी, उपन्यास एवं एकांकी का अध्ययन कराना। 3. प्रमुख रचनाओं के माध्यम से विचार-विमर्श के लिए प्रेरित करना। 4. रचनाओं के माध्यम से मानवीय मूल्यों से परिचित कराना।	
पाठ्य विषय		घंटे
	1. हिंदी गद्य साहित्य का आरंभिक इतिहास - खड़ीबोली का विकास। - अंग्रेजों की शिक्षा नीति। - प्रेस का योगदान। - गद्य के निर्माण में ईसाई मिशनरियों की भूमिका।	15
	2. कहानी - मुक्तिमार्ग - प्रेमचन्द - मूल्य - आचार्य चतुरसेन शास्त्री - परदा - यशपाल - एटम बम - अमृतलाल नागर - सजा - मन्नू भंडारी	15
	3. उपन्यास पचपन खंभे लाल दिवारें - उषा प्रियंवदा	15
	4. एकांकी अंडे के छिलके - मोहन राकेश	15
आधार ग्रंथ	1. पचपन खंभे लाल दिवारें- उषा प्रियंवदा, राजकमल प्रकाशन, सं., दिल्ली, 2009। 2. अंडे के छिलके- मोहन राकेश, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1973।	
अध्यापन पद्धति	व्याख्यान, कार्यशाला, संगोष्ठी, सामूहिक चर्चा, दृश्य-श्रव्य प्रस्तुति	
संदर्भ ग्रंथ	1. शुक्ल, रामचन्द्र, हिंदी साहित्य का इतिहास, हिंदी काशी नगरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी	

	- गुप्त गणपतिचंद्र, हिंदी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद. - तिवारी, रामचन्द्र, गद्य साहित्य, विद्यापीठ प्रकाशन, 2009 - राय गोपाल, हिंदी कहानी का इतिहास भाग 1 और 2, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2016
अधिगम परिणाम	- हिंदी गद्य साहित्य के आरंभिक इतिहास से परिचित होंगे। - कहानी, उपन्यास एवं एकांकी का अध्ययन करेंगे। - प्रमुख रचनाओं के माध्यम से विचार- विमर्श के लिए प्रेरित होंगे। - रचनाओं के माध्यम से मानवीय मूल्यों से परिचित होंगे।



कार्यक्रम : स्नातकहिंदी MAJOR COURSE
 पाठ्यक्रम : HIN - 201
 पाठ्यक्रमकाशीर्षक : हिंदीकाव्य (1960 तक) (Hindi Poetry upto 1960)
 श्रेयांक : 04
 शैक्षणिकवर्षसेलागू : 2024-2025

पाठ्यक्रम के लिए पूर्वापेक्षित	हिंदी काव्य की सामान्य जानकारी अपेक्षित है।	
उद्देश्य	1. हिंदी काव्य के प्रति रुचि बढ़ाना। 2. काव्य के विविध रूपों और कवियों से परिचित कराना। 3. काव्य के माध्यम से विविध सामाजिक सरोकारों के विश्लेषण की क्षमता विकसित करना। 4. काव्य श्रवण, पठन और लेखन-कौशल एवं सर्जन शीलता को विकसित कराना।	
	1.	घंटे
पाठ्यविषय	2. आदिकालीन एवं भक्तिकालीन काव्य - विद्यापति के पद - देख- देख- राधा- रूप अपार - आओल ऋतुपति- राजा बसंत - कबीर के दोहे कस्तूरीकुण्डलिबसै- मृगदूँढेबनमाहि। दुर्लभमानुषजन्महै- देहनबारम्बार। गुरुकुम्हारसिसकुंभहै- गढ़-गढ़काढ़े खोट धीरे-धीरेरेमना, धीरेसबकुछहोय। जाती नपुछोसाधु की, पूछलीजियेज्ञान। - गोस्वामी तुलसीदास- रामचरितमानस रावनुरथीबिरथ-रघुबीरा।देखिबिभिषनभयउअधीरा दैहिकदैविकभौतिकतापा।रामराजनहिंकाहुहिब्यापा।- - मीराबाई के पद बरजोरीम्हांस्यामबिणानरह्यौ- मीरामगनभईहरिकेगुणगाय-	15
	3. रीतिकालीन काव्य बिहारी के दोहे कागदपरनलिखतनबनत- कहतसंदेसुलजात। लिखनबैठिजाकीसबी- गहिगहिगरबगरूर जौचाहतचटकनघटे- मैलोहोइनमित। संगतिसुमतिनपावहींपरेकुमतिकेधंध।-	15

	मेरीभवबाधाहरौ, राधानागरिसोइ। ● घनानन्द अतिसूधोसनेहकोमारगहैजहाँनेकुसयानपबाँकनहीं।- महीदूधसमगनबक भेद न जानै। ● भूषण इंद्रजिमजंभपरबाइवज्यौंअंभपर- चोरीमनमें ठगोरीरूपहीमेंहीनाहीं-	
	4. स्वतंत्रतापूर्व काव्य ● सखि, वे मुझ से कह कर जाते –मैथिली शरण गुप्त ● ठुकरा दो या प्यार करो- सुभद्रा कुमारी चौहान ● बाँधो न नाव इस ठाँव बंधु- सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' ● पुष्प की अभिलाषा –माखन लाल चतुर्वेदी ● तब समझूँगा आया वसंत –शिवमंगल सिंह 'सुमन' ● जो बीत गई सो बात गई- हरिवंशराय बच्चन	15
	5. स्वातंत्र्योत्तर काव्य (सन् 1960 तक) ● अकाल और उसके बाद-नागार्जुन ● मुझे कदम कदम पर - मुक्तिबोध ● केतकी पूनो - अज्ञेय ● गीतफरोश- भवानीप्रसादमिश्र ● विदेह -भारतभूषण अग्रवाल ● गुनाह का गीत- धर्मवीर भारती	15
अध्यापनविधि	व्याख्यान, सामूहिक चर्चा, स्वाध्याय, संगोष्ठी, काव्य प्रस्तुति, कार्यशाला।	
संदर्भग्रंथ	1. राम किशोर शर्मा, आधुनिक कवि, लोक भारती प्रकाशन 2. डॉ. नगेंद्र आधुनिक हिंदी कविता की मुख्य प्रवृत्तियाँ, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, सं. 1979 3. डॉ. हरदयाल: आधुनिक हिंदी कविता, शब्दकार, दिल्ली, सं. 1993 4. सं. लीलाधर मंडलोई : कविता के सौबरस, शिल्पायन प्रकाशन, नई दिल्ली, सं. 2013 5. परमानंद श्रीवस्तव : कविता का अर्थात्, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, सं. 2008 6. बच्चनसिंह : हिंदी साहित्य का दूसरा इतिहास, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, सं. 2017	
अधिगम परिणाम	1. हिंदी काव्य के प्रति रुचि बढ़ेगी। 2. काव्य के विविध रूपों और कवियों से परिचित होंगे। 3. काव्य के माध्यम से विविध सामाजिक सरोकारों के विश्लेषण की क्षमता विकसित कर सकेंगे। 4. काव्य श्रवण, पठन और लेखन कौशल एवं सर्जनशीलता विकसित होगी।	

कार्यक्रम : स्नातक हिंदी MINOR COURSE
 पाठ्यक्रम : HIN-211
 पाठ्यक्रम का शीर्षक : गीत और ग़ज़ल (Geet and Gazal)
 श्रेयांक : 04
 शैक्षणिक वर्ष से लागू : 2024-2025

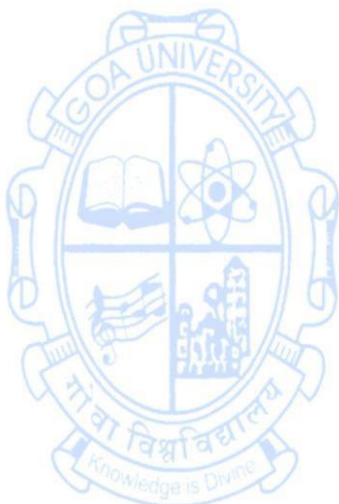
पाठ्यक्रम के लिए पूर्वापेक्षित	Nil	
उद्देश्य	1. गीत एवं ग़ज़ल की संकल्पना एवं स्वरूप से परिचित कराना। 2. विभिन्न रचनाकारों के गीतों एवं ग़ज़लों से अवगत कराना। 3. गीत एवं ग़ज़ल की रूचि में अभिवृद्धि कराना। 4. गीत एवं ग़ज़लों के विश्लेषण की क्षमता विकसित कराना।	
पाठ्य विषय	1. गीत - गीत : संकल्पना एवं स्वरूप - गीत : विकास परंपरा - गीत : विविध प्रकार	घंटे 10
	2. चयनित गीत : - न तुम सो रही हो, न मैं सो रहा हूँ -हरिवंशराय बच्चन - आदमी का आकाश... - रामावतार त्यागी - कारवाँ गुजर गया... -गोपालदास सक्सेना 'नीरज' - कल हमारा है.....-शैलेन्द्र - ऐ मेरे वतन के लोगों - प्रदीप (रामचन्द्र नारायणजी द्विवेदी) - रहे ना रहे हम महका करेंगे...- मजरूह सुल्तानपुरी - जिंदगी एक सफर है सुहाना- हसरत जयपुरी - आदमी मुसाफिर है, आता है जाता -आनंद बक्षी	20
	3. ग़ज़ल - ग़ज़ल : संकल्पना एवं स्वरूप - ग़ज़ल : विकास परंपरा - ग़ज़ल : विविध प्रकार	10
	4. चयनित ग़ज़ल : - मैं चमारों की गली तक ले चलूँगा तुम्हें- अदम गोड़वी - अपने दिल का हाल यारों- शमशेर बहादुर सिंह - कहाँ तो तय था चिरागाँ हर एक घर के लिए-दुष्यंतकुमार - सपने अनेक थे तो मिले स्वप्न -फल अनेक -ज़हीर कुरेशी - गरम रोटी पर नमक और तेल- अनूप वशिष्ठ - अमृतकण -प्रकाश भोसले	20

	• तुमको देखा तो ये खयाल आया -जावेद अख्तर • तुम इतना जो मुस्कुरा रहे हो - कैफी आज़मी	
अध्यापन पद्धति	दृश्य श्रव्य प्रस्तुतीकरण, चर्चा, अतिथि व्याख्यान, व्यावहारिक प्रयोग	
संदर्भ ग्रंथ	1. कौशिक, शिवशरण, हिंदी गीत और ग़ज़ल का समकालीन परिदृश्य, अध्ययन पब्लिशर्स, दिल्ली, 2011 2. डॉ. विमल : हिंदी चित्रपट एवं संगीत का इतिहास, संजय प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2010 3. अस्थाना, रोहिताश्व, हिंदी ग़ज़ल उद्भव और विकास, सामयिक प्रकाशन, दिल्ली, 2010 4. सं. कमलेश्वर : हिन्दुस्तानी ग़ज़लें, राजपाल एण्ड सन्ज़, दिल्ली, 2010 5. डॉ. सादिका असलम नवाब 'सहर' : साठोत्तरी हिंदी ग़ज़ल : शिल्प एवं संवेदना, प्रकाशन संस्थान, नयी दिल्ली, 2007 6. डॉ. सरदार मुजावर- राष्ट्रीय एकता और हिंदी ग़ज़ल, वाणी प्रकाशन, 2002 7. डॉ. सरदार मुजावर- हिंदी ग़ज़ल के विविध आयाम, वाणी प्रकाशन, 2003 8. डॉ. मधु खराटे : साठोत्तरी हिंदी ग़ज़ल, विद्या प्रकाशन, कानपुर, 2002 9. डॉ. मधु खराटे : हिंदी ग़ज़ल के प्रमुख हस्ताक्षर, विद्या प्रकाशन, कानपुर, 2012 10. डॉ. मधु खराटे : दुष्यंतोत्तर हिंदी ग़ज़ल, विद्या प्रकाशन, कानपुर, 2013	
अधिगम परिणाम	1. गीत एवं ग़ज़ल की संकल्पना एवं स्वरूप से परिचित होंगे। 2. विभिन्न रचनाकारों के गीतों एवं ग़ज़लों से अवगत होंगे। 3. गीत एवं ग़ज़ल की रुचि में अभिवृद्धि होगी। 4. गीत एवं ग़ज़लों के विश्लेषण की क्षमता विकसित होगी।	

कार्यक्रम : स्नातक हिंदी Ability Enhancement Course (AEC)
 पाठ्यक्रम : HIN- 251
 पाठ्यक्रम का शीर्षक : सम्प्रेषण कौशल (Communication Skill)
 श्रेयांक : 02
 शैक्षणिक वर्ष : 2024-2025

पाठ्यक्रम के लिए पूर्वापेक्षित	हिंदी भाषा का ज्ञान होना अपेक्षित है।	
उद्देश्य	1. सम्प्रेषण कौशल विकसित करना। 2. प्रभावशाली सम्प्रेषण कौशल विकसित करना। 3. भाषागत आत्मविश्वास बढ़ाना। 4. व्यक्तित्व का विकास करना।	
विषयवस्तु	1. भाषिक सम्प्रेषण :स्वरूप और सिद्धांत - सम्प्रेषण: अवधारणा एवं महत्व - सम्प्रेषण की प्रक्रिया - सम्प्रेषण के विभिन्न प्रकार एवं साधन - सम्प्रेषण की चुनौतियां	घंटे 15
	2. सम्प्रेषण के माध्यम :व्यावहारिक प्रयोग - सम्प्रेषण कौशल : श्रवण कौशल, पठन कौशल, आंगिक एवं वाचिक भाषा कौशल - एकालाप, संवाद, बातचीत, सामूहिक चर्चा, बैठक, साक्षात्कार, मीडिया कवरेज - नाट्यवाचन, कविता वाचन, कहानी वाचन, सिनेमा - संवाद प्रस्तुति - संवाद कौशल के जरिए व्यक्तित्व विकास	15
अध्यापन विधि	व्याख्यान, सामूहिक चर्चा, दृश्य-श्रव्य प्रस्तुतिकरण, शैक्षिक भ्रमण, कार्यशाला, व्यावहारिक प्रयोग	
सन्दर्भ- ग्रंथ	1. डॉ. अवनीश कुमार मिश्रा, डॉ. प्रवीन कुमार अग्रवाल, सम्प्रेषण कौशल, साहित्य भवन पब्लिकेशन्स, २०२२ 2. डॉ. मंजु मुकुल, सम्प्रेषण: चिंतन और दक्षता शिवालिक प्रकाशन, दिल्ली, २०१७ 3. रमेश सनवाल, बोलचाल की कौशल कला: किंडल एडिशन, २०१९ 4. डॉ. विनोद मिश्र, डॉ. नरेंद्र शुक्ल मिश्र, व्यावसायिक सम्प्रेषण, संजय साहित्य भवन 5. सुरेश कुमार, सम्प्रेषण व्याकरण: सिद्धांत और स्वरूप, २०१९	

	6. हंसराज पाल और डॉ. मंजुलता शर्मा, व्यावसायिक संप्रेषण, हिंदी माध्यम कार्यान्वय, दिल्ली विश्वविद्यालय प्रकाशन, २०१२ 7. वैशना वारंग, संप्रेषणपरक हिंदी भाषा शिक्षण, प्रकाशन संस्थान, दरियागंज, नई दिल्ली 2022 8. डॉ. प्रवीण अग्रवाल, अवीनाश कुमार मिश्र, संप्रेषण कौशल, साहित्य भवन पब्लिकेशन, दिल्ली
अधिगम परिणाम	1. संप्रेषण कौशल और नेतृत्व की क्षमता का विकास होगा। 2. रोजगार के अच्छे अवसर प्राप्त कर सकेंगे। 3. भाषा में प्रभावशाली ढंग से विचारों का आदान-प्रदान कर सकेंगे। 4. सामूहिक संघ की भावना बढ़ेगी।



सत्र: IV

कार्यक्रम: स्नातक हिंदी

पाठ्यक्रम: HIN-202

पाठ्यक्रम का शीर्षक: साठोत्तरी हिंदी काव्य (Hindi Poetry after 1960)

श्रेयांक: 04

शैक्षणिक वर्ष से लागू: 2024-25

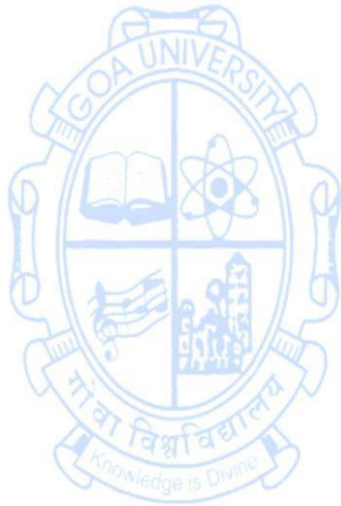
पाठ्यक्रम के लिए पूर्वापेक्षित	1960 के पूर्व हिंदी काव्य का ज्ञान आवश्यक है।	
उद्देश्य	1. साठोत्तरी हिंदी कविता के युगीन परिवेश से अवगत कराना। 2. साठोत्तरी हिंदी कविता के प्रसिद्ध कवियों से परिचित कराना। 3. चयनित कविताओं में निहित जीवन मूल्यों का आकलन कराना। 4. चयनित कविताओं के माध्यम से विविध विमर्शों तथा सरोकारों के विश्लेषण की क्षमता विकसित कराना।	
पाठ्यविषय		घंटे
	1. साठोत्तरी हिंदी कविता: युगीन परिवेश • सन् 1960 से सन् 1990 तक -सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक आर्थिक परिवेश, • सन् 1990 से 2020 तक -सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक आर्थिक परिवेश,	15
	2. साठोत्तरी हिंदी कवियों का सामान्य परिचय (1960 से 1990) रघुवीर सहाय, सर्वेश्वर दयाल सक्सेना, धूमिल, केदारनाथ सिंह चंद्रकांत देवताले, अरुण कमल, लीलाधर जगूड़ी, ज्ञानेंद्रपति उदयप्रकाश, मंगलेश डबराल, कुंवर नारायण, लीलाधर मंडलोई ओमप्रकाश वाल्मीकि, सूरजपाल चौहान, अनामिका, निलेश रघुवंशी, निर्मला पुतुल, जसिंता केरकेट्टा, बद्री नारायण।	15
	3. साठोत्तरी हिंदी कविता- 1960 से 1990 तक • हँसो हँसो जल्दी हँसो -रघुवीर सहाय • सुख हथेलियाँ -सर्वेश्वर दयाल सक्सेना • रोटी और संसद -धूमिल • बुनाई का गीत -केदारनाथ सिंह • चिड़िया का प्रसव -लीलाधर जगूड़ी • मैं जो कह रहा हूँ -चंद्रकांत देवताले	15
	4. साठोत्तरी हिंदी कविता: 1990 से 2020 तक • पुतली में संसार -अरुण कमल • आज़ादी उर्फ गुलामी - ज्ञानेंद्र पति • कब होगी वह भोर -सूरजपाल चौहान	15

	● सत्रह साल की लड़की –निलेश रघुवंशी ● नदी, पहाड़ और बाजार –जसिंता के रकट्टा ● देश -बद्री नारायण	
अध्यापनविधि	व्याख्यान, सामूहिक चर्चा, दृश्य-श्रव्य प्रस्तुतिकरण , कार्यशाला	
आधारग्रंथ	1. रघुवीर सहाय, हँसो हँसो जल्दी हँसो, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नयी दिल्ली, 1978 2. सर्वेश्वर दयाल सक्सेना, प्रतिनिधि कविताएँ, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, 1989 3. केदारनाथ सिंह, प्रतिनिधि कविताएँ, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, 4. धूमिल, कल सुनना मुझे, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, 1999 5. चंद्रकांत देवताले, लकड़ बग्घा हँस रहा है, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2000 6. अरुण कमल, पुतली में संसार, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2004 7. लीलाधर जगूड़ी कवि, ने कहा, किताबघर प्रकाशन, 2008 8. नीलेश रघुवंशी, घरनिकासी, किताबघर प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2009 9. ज्ञानेन्द्रपति, कवि ने कहा, किताबघर, नयी दिल्ली, 2011 10. नीलेश रघुवंशी, कवि ने कहा, किताबघर प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2016 11. बद्रीनारायण, तुमझी केशब्द, राजकमल प्रकाशन, 2019 12. सूरजपाल चौहान 2007, कब होगी वह भोर, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली,	
संदर्भग्रंथ	1. डॉ. लक्ष्मीसागर वाष्पेय, स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी साहित्य का इतिहास 2012 राजपाल एंड सन्स 2. डॉ. मनोज सोनकर, साठोत्तरी हिंदी कविता : संवेदना एवं शिल्प, प्रकाशन संस्थान, नयी दिल्ली, 1994 3. अरुणकमल, कविता और समय, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2002 4. रामशरण जोशी, इक्कीसवीं सदी के संकट, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2003 5. डॉ. महेश तिवारी, हिंदी काव्य समीक्षा के प्रतिमान, वाणी प्रकाशन संस्थान, नयी दिल्ली, 2005 6. परमानंद श्रीवास्तव, कविता का अर्थात्, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2008 7. डॉ. सुभाष गंगवाल, भूमंडलीकरण एवं भारत, मंगलदीप पब्लिकेशंस, जयपुर, 2008 8. डॉ. हरिनारायण ठाकुर, दलित साहित्य का समाज शास्त्र, भारतीय ज्ञानपीठ, नयी दिल्ली, 2009	
अधिगमपरिणाम	1. साठो त्तरी हिंदी कविता के युगीन परिवेश से अवगत होंगे। 2. साठोत्तरी हिंदी कविता के प्रसिद्ध कवियों से परिचित होंगे। 3. चयनित कविताओं में निहित जीवनमूल्यों का आकलन करेंगे। 4. चयनित कविताओं के माध्यम से विविध विमर्शों तथा सरोकारों के विश्लेषण की क्षमता विकसित करेंगे।	

कार्यक्रम : स्नातक हिंदी
 पाठ्यक्रम : HIN-203
 पाठ्यक्रम का शीर्षक : रचनाकार का विशेष अध्ययन : भीष्म साहनी
 (Study of Special Author: Bhishma Sahani)
 श्रेयांक : 04
 शैक्षणिक वर्ष से लागू : 2024-25

पाठ्यक्रम के लिए पूर्वापेक्षित	भीष्म साहनी के साहित्य का सामान्य ज्ञान अपेक्षित है।	
उद्देश्य	1. भीष्म साहनी के जीवन एवं रचनात्मक अवदान से परिचित कराना। 2. भीष्म साहनी की साहित्यिक दृष्टि को समझाना। 3. भीष्म साहनी के साहित्यिक परिवेश से अवगत कराना। 4. भीष्म साहनी द्वारा रचित अन्य विधाओं के महत्व को समझाना।	
पाठ्य विषय	1. रचनाकार- भीष्म साहनी	घंटे 10
	- जीवन परिचय एवं परिवेश - कृतियों का सामान्य परिचय - भीष्म साहनी की साहित्यिक दृष्टि	
	2. कथा-साहित्य	20
	- कहानियाँ: -अमृतसर आ गया -चीफ की दावत -निशाचर -नीली आँखें -वाइचू - उपन्यास : तमस	
	3. नाटक	15
	हानूश	
	4. आत्मकथा	15
	आज के अतीत	
अध्यापन विधि	व्याख्यान, सामूहिक चर्चा, संगोष्ठी, दृश्य-श्रव्य, प्रस्तुति, नाट्य अभिनय आदि	
आधार ग्रंथ	1. भीष्म साहनी, हानूश, राजकमल प्रकाशन, 2002 2. भीष्म साहनी, 10 प्रतिनिधि कहानियाँ, किताबघर प्रकाशन, 2005 3. भीष्म साहनी, तमस, राजकमल प्रकाशन, 1973 4. भीष्म साहनी, आज के अतीत, राजकमल प्रकाशन, 2015	
संदर्भ ग्रंथ	1. खान, रहीम पठान, भीष्म साहनी का कहानी साहित्य (कथ्य एवं शिल्प), संजय प्रकाशन, 2021	

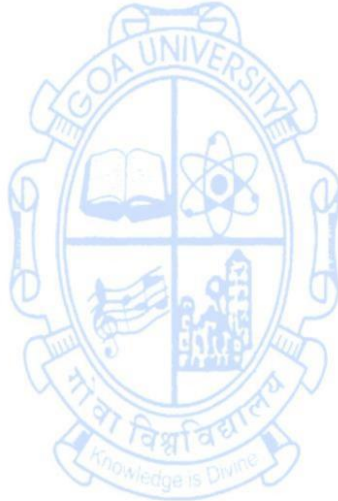
	2. डॉ.उपाध्याय, रमेश, भारतीय साहित्य के निर्माता -भीष्म साहनी, साहित्य अकादमी, दिल्ली, 2015 3. डॉ.द्विवेदी, विवेक, भीष्म साहनी-उपन्यास साहित्य, राजकमल प्रकाशन 4. डॉ.कुचेकर, भारत, भीष्म साहनी (व्यक्तित्व एवं कृतित्व, राजकमल प्रकाशन
अधिगम परिणाम	1. भीष्म साहनी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व से परिचित होंगे। 2. भीष्म साहनी के साहित्य के परिवेश को समझ पाएंगे। 3. भीष्म साहनी के कथा तथा कथेतर साहित्य को तत्त्वों के आधार पर मूल्यांकन कर सकेंगे। 4. रचनाकार के सौन्दर्य दृष्टि को जानेंगे।



कार्यक्रम : स्नातक हिंदी
 पाठ्यक्रम: HIN- 204
 पाठ्यक्रम का शीर्षक : लोकसाहित्य (Folk Literature)
 श्रेयांक : 04
 शैक्षणिक वर्षसे लागू : 2024-2025

पाठ्यक्रम के लिए पूर्वापेक्षित)	कुछ नहीं
उद्देश्य	1. लोकसाहित्य का परिचय कराना। 2. लोकसाहित्य की विविध विधाओं की जानकारी देना। 3. लोकगीत तथा लोककथा से अवगत कराना। 4. लोकनाट्य तथा लोकगाथा का परिचय कराना।
पाठ्यविषय	1. 15 2. लोकसाहित्य • लोक एवं लोकसाहित्य : अवधारणा एवं स्वरूप • लोकसाहित्य की विशेषताएँ • लोकसंस्कृति और लोकसाहित्य • लोकसाहित्य का महत्व 2. लोकसाहित्य की विविध विधाएँ • लोकगीत • लोककथा • लोकगाथा • लोकनाट्य 3. लोकगीत तथा लोककथा: अवधारणा एवं स्वरूप • राजस्थानी - लोकगीत • कोंकणी - लोककथा 4. लोकगाथा तथा लोकनाट्य: अवधारणा एवं स्वरूप • अवधी - लोकगाथा • बुंदेलखंडी - नौटंकी
	व्याख्यान, संगोष्ठी, सामूहिक चर्चा, दृश्य-श्रव्य प्रस्तुतिकरण, लोक कलाकारों से भेट वार्ता
	जयंती नायक, गोवा की लोककथाएँ, प्रभात प्रकाशन, 2021
	1. उषा सक्सेना, लोक साहित्य एवं लोक संस्कृति, राजभाषा प्रकाशन, दिल्ली, 2011 2. डॉ. नन्दलाल कल्ला, हिंदी का प्रादेशिक लोक साहित्यशास्त्र, राजस्थानी ग्रन्थागार, जोधपुर, 2014 3. विद्या चौहान, लोकगीतों की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, प्रगति प्रकाशन, 1972

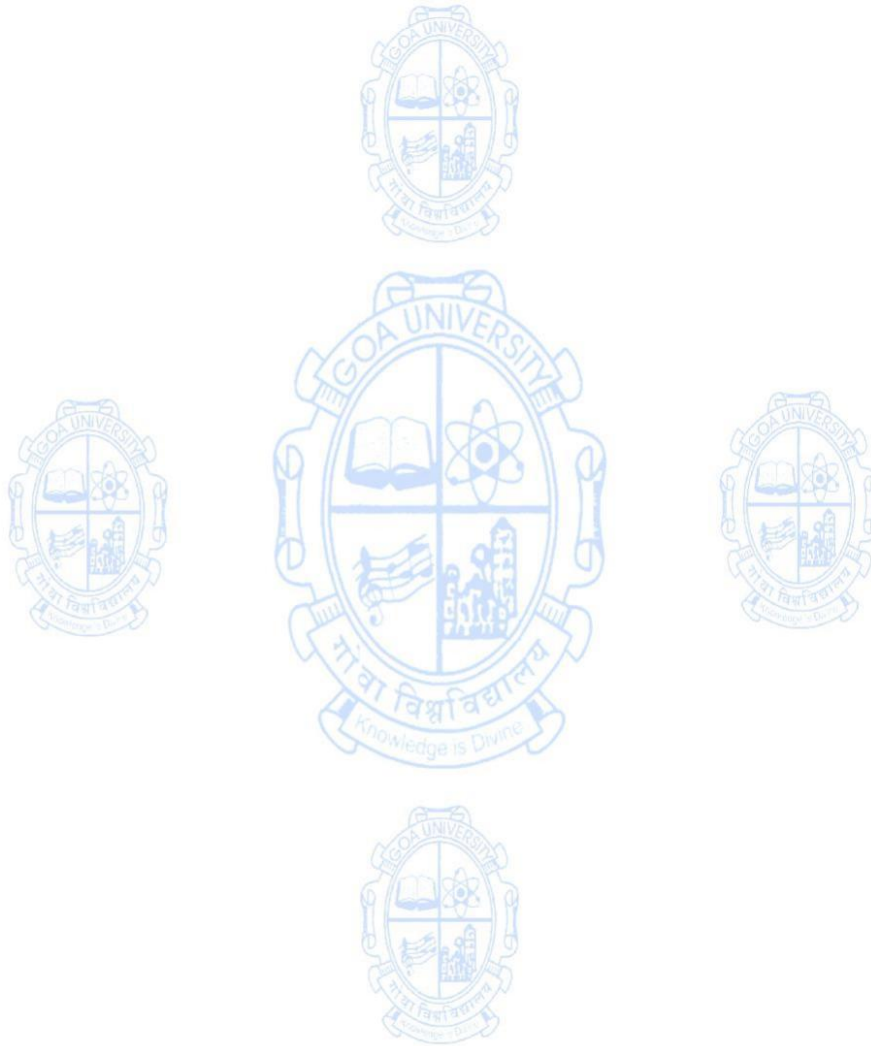
	4. मदनलाल शर्मा, राजस्थानी लोकगीतों का सांस्कृतिक अध्ययन, साहित्य संस्थान, जोधपुर, 1987 5. पूर्णिमा गहलोत, राजस्थानी लोकगीत, युनिक ट्रेडर्स, जयपुर, 1951 6. प्रभाकर मांडे, लोकसाहित्याचे स्वरूप, परिमल प्रकाशन, 1978
अधिगमपरिणाम	1. लोक साहित्य से परिचित होंगे। 2. लोक साहित्य के विविध विधाओं से परिचित होंगे। 3. लोकगीत तथा लोककथा की जानकारी प्राप्त होगी। 4. लोकनाट्य तथा लोकगाथा को जानेंगे।



कार्यक्रम: : स्नातक हिंदी MAJORCOURSE
 पाठ्यक्रम : HIN - 205
 पाठ्यक्रम का शीर्षक : हिंदी निबंध (Hindi Essay)
 श्रेयांक: : 0 2 (30)
 शैक्षणिक वर्ष से लागू: 2024-25

पाठ्यक्रम के लिए पूर्वापेक्षित	निबंध विधा की सामान्य जानकारी अपेक्षित हैं।	
उद्देश्य	1. हिंदी निबंध की संकल्पना एवं स्वरूप से अवगत कराना। 2. हिंदी निबंधों की विकास परंपरा एवं प्रकारों से परिचित कराना। 3. निबंधों के माध्यम से हिन्दी साहित्य और समाज में हुए परिवर्तन से अवगत कराना। 4. निबंध के लेखन के लिए प्रेरित कराना।	
पाठ्य विषय	1. हिन्दी निबंध • हिंदी निबंध : संकल्पना और स्वरूप • हिंदी निबंध : विकास - परंपरा • निबंध के प्रकार	घंटे 10
	2. चयनित निबंध एवं निबंधकार • 'आप'- प्रतापनारायण मिश्र • क्रोध - आरामचन्द्र शुक्ल • नाखून क्यों बढ़ते हैं ? - हजारीप्रसाद द्विवेदी • पाप के चार हथियार- कन्हैयालाल प्रभाकर • गेहूं बनाम गुलाब -रामवृक्ष बेनीपुरी • भोलाराम का जीव - हरिशंकर परसाई • हम भ्रष्टन के भ्रष्ट हमारे , -शरद जोशी • हमारे शहर का पुस्तक नहीं पुरस्कार मेला -सूर्यबाला	20
अध्यापन पद्धति	व्याख्यान, निबंधों का पाठ, सामूहिक चर्चा, भ्रमण, कार्यशाला, प्रत्यक्ष निबंध लेखन।	
संदर्भ ग्रंथ	1. चतुर्वेदी, रामस्वरूप, गद्य विन्यास और विकास, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 1996. 2. तिवारी, रामचंद्र, हिंदी का गद्य साहित्य, चौखम्भा प्रकाशन, वाराणसी, 1987. 3. वर्मा, धीरेंद्र, हिंदी साहित्य कोश, ज्ञानमंडल लिमिटेड, वाराणसी, उत्तर प्रदेश, 2015.	
अधिगम परिणाम	1. हिंदी निबंध की संकल्पना एवं स्वरूप से अवगत होंगे। 2. हिंदी निबंधों की विकास परंपरा एवं प्रकारों से परिचित होंगे।	

	3. निबंधों के माध्यम से हिन्दी साहित्य और समाज में हुए परिवर्तन से अवगत होंगे। 4. निबंध के लेखन के लिए प्रेरित होंगे।
--	---



कार्यक्रम : स्नातक हिंदी MINOR COURSE (VET)
 पाठ्यक्रम : HIN-221
 पाठ्यक्रम का शीर्षक : प्रयोजनमूलक हिंदी (Functional Hindi)
 श्रेयांक : 04 (3L+1P)
 शैक्षिक वर्ष से लागू : 2024-25

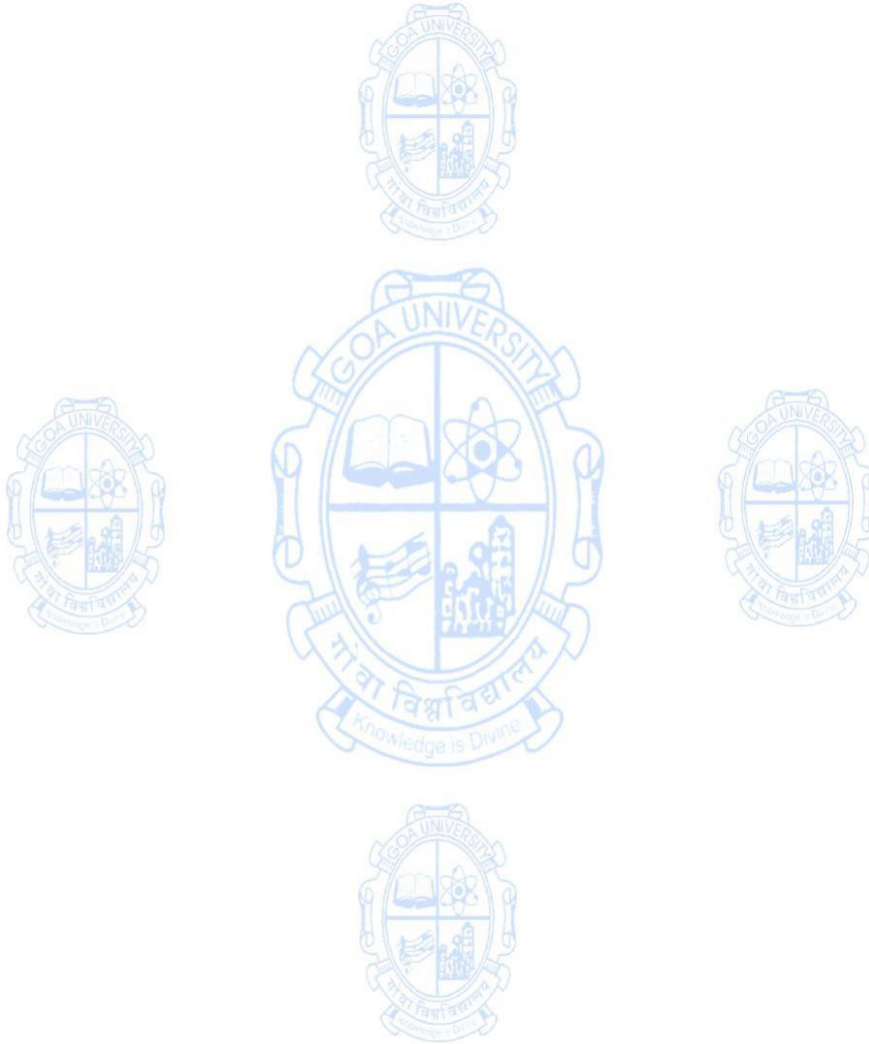
पाठ्यक्रम के लिए पूर्वापेक्षित	कार्यालयीन हिंदी का सामान्य ज्ञान अपेक्षित है।	
उद्देश्य	1. प्रयोजनमूलक हिंदी की अवधारणा एवं स्वरूप से अवगत कराना। 2. विविध कार्यालयीन पत्रों के प्रारूपों से परिचित कराना। 3. संगणक प्रौद्योगिकी कौशल को विकसित करना। 4. रोजगार अर्जन की दृष्टि से सक्षम बनाना।	
		घंटे
पाठ्य विषय	1. प्रयोजनमूलक हिंदी - प्रयोजनमूलक हिंदी : अवधारणा एवं स्वरूप - हिंदी वर्ण और शब्दों का मानक रूप - हिंदी भाषा के विविध रूप : राजभाषा, राष्ट्रभाषा, संपर्क भाषा, संचार भाषा, तकनीकी एवं यांत्रिक भाषा - प्रयोजनमूलक हिंदी के प्रयोगात्मक क्षेत्र - प्रयोजनमूलक हिंदी : रोजगार के अवसर	15
	2. सामान्य आलेखन, कार्यालयीन पत्र-व्यवहार एवं पारिभाषिक शब्दावली - निमंत्रण पत्र - व्यावसायिक पत्र - संपादक के नाम पत्र - आवेदन पत्र - अधिसूचना - आदेश - परिपत्र - ज्ञापन - पारिभाषिक शब्दावली	15
	3. हिंदी भाषा, संगणक और इंटरनेट - हिंदी टंकण: फोनेटिक एवं इनस्क्रिप्ट, स्पीच टू टेक्स्ट तकनीक - इंटरनेट पर उपलब्ध हिंदी पत्र-पत्रिकाएँ, प्रमुख हिंदी पोर्टल एवं वेबसाइट, ई पुस्तकालय एवं ब्लॉग - सरकारी एवं गैर सरकारी चैनल, ई पाठशाला, ज्ञानदर्शन, 'स्वयं' (SWAYAM Study Webs Of Active Learning For Young Aspiring	15

	Minds) पोर्टल पर उपलब्ध मुक्त ऑनलाइन पाठ्यक्रम (MOOCs) • कृत्रिम बुद्धिमत्ता (Artificial Intelligence) और हिंदी	
	4. व्यावहारिक प्रयोग • पत्र लेखन - व्यक्तिगत पत्र, व्यावसायिक पत्र तथा कार्यालयीन पत्र • प्रस्तुति कौशल - पावरपॉइंट प्रस्तुति, वीडियो निर्मिति • अंग्रेजी से हिंदी में अनुवाद - विभिन्न क्षेत्रों के दस्तावेजों का अनुवाद • देवनागरी लिपि में टंकण • सोशल मीडिया : लेखन एवं प्रस्तुतीकरण	30
अध्यापन विधि	व्याख्यान, चर्चा, पावरपॉइंट प्रस्तुति, दृश्य-श्रव्य माध्यमों का प्रयोग, तकनीकी विशेषज्ञों द्वारा प्रशिक्षण	
संदर्भ ग्रंथ	1. डॉ. नरेश मिश्र : प्रयोजनमूलक हिंदी, राजपाल एंड सन्स, दिल्ली, सं. 2013 2. डॉ. पी. लता : प्रयोजनमूलक हिंदी, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, सं. 2015 3. डॉ. कृष्णकुमार गोस्वामी : प्रयोजनमूलक भाषा और कार्यालयी हिंदी, कलिंगा प्रकाशन, दिल्ली, सं. 1992 4. डॉ. अर्जुन चव्हाण : मीडिया कालीन हिंदी : स्वरूप एवं संभावनाएँ, राधाकृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, दिल्ली, सं. 2005 5. डॉ. विनोद गोदरे : प्रयोजनमूलक हिंदी, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, सं. 1991	
अधिगम परिणाम	1. छात्र प्रयोजनमूलक हिंदी की अवधारणा एवं स्वरूप से अवगत होते हुए उसका प्रयोग करने में सक्षम होंगे। 2. छात्र व्यक्तिगत, व्यावसायिक एवं कार्यालयीन पत्र लेखन में निपुण होंगे। 3. छात्र संगणक एवं इंटरनेट प्रयोग में कौशल हासिल करते हुए अपने कार्य में उसका उचित उपयोग कर पायेंगे। 4. छात्र प्रयोजनमूलक हिंदी का व्यावहारिक प्रशिक्षण पाकर रोजगार अर्जन की दृष्टि से सक्षम होंगे।	

कार्यक्रम: : स्नातक हिंदी Ability Enhancement Course(AEC)
 पाठ्यक्रम: : HIN-252
 पाठ्यक्रम का शीर्षक : संभाषण कला (Sambhashan kala)
 श्रेयांक : 2
 शैक्षिक वर्ष : 2024-2025

पाठ्यक्रम के लिए पूर्वापेक्षित	कुछ नहीं
उद्देश्य	1. संभाषण कला के विभिन्न रूपों से परिचित कराना। 2. संभाषण कला कौशल की उपयोगिता को समझाना। 3. संभाषण कला को संवर्धन कराना।
विषयवस्तु	घंटे 15 1. संभाषण: अर्थ एवं विभिन्न रूप • वार्तालाप अवाचिक ,एकालाप ,विवाद-वाद ,व्याख्यान , जन संबोधन। ,अभिव्यक्ति • जन संपर्क में वाक्कला की उपयोगिता। • संभाषण कला के प्रमुख उपादान मानक ,यथेष्ट भाषा ज्ञान- अंतराल ,सटीक प्रस्तुति ,उच्चारणध्वनि ,(वाल्जूम)वेग , (एक्सेण्ट)लहजा
	घंटे 15 2. संभाषण कला के विभिन्न रूप • उद् घोषणा कला) ,अनाउन्सेमेंट ,(ऑखों देखा हाल ,)कमेन्ट्री,(संचालन ,(एकरिंग)वाचन कला समाचार , ,(.वी.टी ,रेडियो)वाचनमंचीय वाचन व्यंग्य ,कहानी ,कविता) (आदि • संवादी के (कनवर्सेशनल लैंग्वेज)रूप में हिंदी की भाषिक संवेदना की विवेचना।
अध्यापन विधि	व्याख्यान तथा चर्चा,पी.पी.टी.प्रस्तुति, दृश्य-श्रव्यमाध्यमों का प्रयोग, तकनीकी विशेषज्ञों द्वारा प्रशिक्षण
संदर्भ ग्रंथ	1. सं पंकज बिष्ट अकादमिक ,बाजार और लोकतंत्र ,भूपेन सिंह: मीडिया - दिल्ली। ,प्रतिभा 2. तेजपाल चौधरी: अच्छी हिंदी संभाषण और लेखन ,हिंदी बुक सेंटर। 3. यज्ञ दत्त शर्मा: आदर्श भाषण कला ,आत्माराम अण्ड सन्स ,नयी दिल्ली। 4. महेश शर्मा:भाषण कला ,प्रभात प्रकाशन ,दिल्ली 2021 5. देवनाथ उपाध्याय एम .ए,भाषण संभाषण , ,किताब महल, इलाहबाद 1989
अधिगम परिणाम	1. संभाषण के स्वरूप से अवगत होंगे। 2. संभाषण कला के विभिन्न रूपों से परिचित होंगे। 3. संभाषण कला कौशल की उपयोगिता को समझेंगे।

4. संभाषण कला संवर्धन करेंगे।



सत्र V

कार्यक्रम: स्नातकहिंदी MAJORCOURSE

पाठ्यक्रम : HIN -300

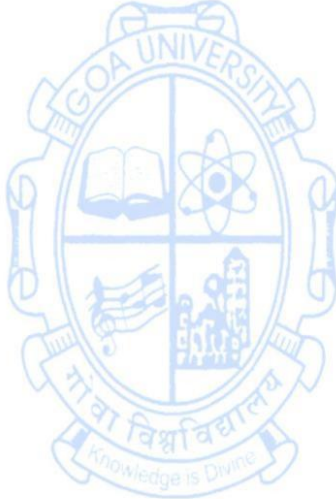
पाठ्यक्रम का शीर्षक: हिंदी साहित्य का इतिहास : आदिकाल से रीतिकाल तक
(History of Hindi Literature :Aadikal to Ritikal)

श्रेयांक: 04

शैक्षणिक वर्ष से लागू : 2025-26

पाठ्यक्रम के लिए पूर्वापेक्षित	हिंदी साहित्य के आरंभिक साहित्य इतिहास की जानकारी आवश्यक है	
उद्देश्य	1. हिंदी साहित्य - काल विभाजन एवं परिवेश से परिचित कराना । 2. हिंदी साहित्य की परिवेशगत प्रवृत्तियों से अवगत कराना । 3. हिंदी के काल खंडों के अनुसार रचनाकारों का परिचय कराना । 4. हिंदी साहित्य के इतिहास के महत्व को समझना ।	
विषयवस्तु		घंटे
	1. आदिकाल: परिचयात्मक अध्ययन • सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक परिवेश । • आदिकालीन विभिन्न काव्यधाराओं का प्रवृत्तिगत परिचय (सिद्ध, नाथ, जैन तथा रासो काव्य)	15
	2. भक्तिकाल : परिचयात्मक अध्ययन • सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक परिवेश । • भक्तिकालीन विभिन्न काव्यधाराओं का प्रवृत्तिगत परिचय- -निर्गुण भक्तिकाव्य-संत काव्य एवं सूफी काव्य । -सगुण भक्तिकाव्य- रामभक्ति एवं कृष्णभक्ति काव्य ।	15
	3. रीतिकाल: परिचयात्मक अध्ययन • सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक परिवेश । • रीतिकालीन काव्यधाराएँ: रीतिबद्ध, रीतिसिद्ध एवं रीतिमुक्त काव्य	15
	4. प्रतिनिधि रचनाकार सरहपा, स्वयंभू, गोरखनाथ, चंदबरदाई, विद्यापति, कबीर, रैदास, जायसी, मीराबाई, सूरदास, तुलसीदास, केशव, बिहारी, मतिराम, देव, पद्माकर, घनानन्द, भूषण ।	15
अध्यापन विधि	व्याख्यान, सामूहिक चर्चा, संगोष्ठी, दृश्य-श्रव्य, प्रस्तुति, आदि	
संदर्भ ग्रंथ	1. आ. रामचंद्र शुक्ल, हिंदी साहित्य का इतिहास, लोकभरती प्रकाशन, इलाहाबाद 2002. 2. आ. हजारी प्रसाद द्विवेदी, हिंदी साहित्य का आदिकाल, राजकमल प्रकाशन, 3. हिंदी साहित्य का उद्भव एवं विकास, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2015.	

	4. डॉ. नगेन्द्र, हिंदी साहित्य का इतिहास, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 2016. 5. रामसजन पाण्डेय, हिंदी साहित्य का इतिहास, संजय प्रकाशन, हरियाणा, 2016
अधिगम परिणाम	1. हिंदी साहित्य - काल विभाजन एवं परिवेश से परिचित होंगे । 2. हिंदी साहित्य की परिवेशगत प्रवृत्तियों का परिचय होगा । 3. हिंदी के काल खंडों के अनुसार रचनाकारों से अवगत होंगे । 4. हिंदी साहित्य के इतिहास के महत्व को समझेंगे ।



कार्यक्रम : स्नातक हिंदी MAJOR COURSE
 पाठ्यक्रम : HIN-301
 पाठ्यक्रम का शीर्षक : अस्मितामूलक विमर्श (Identity-Based Discourse)
 श्रेयांक : 04
 शैक्षणिक वर्ष से लागू : 2025-26

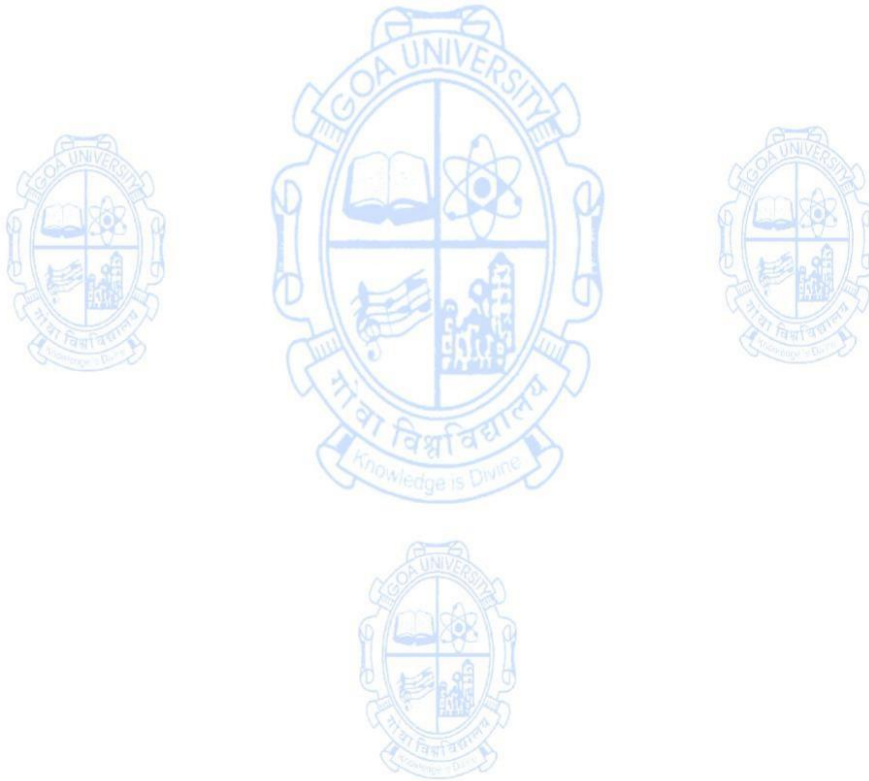
पाठ्यक्रम के लिए पूर्वापेक्षित	हिंदी साहित्य के वैचारिक पृष्ठभूमि की जानकारी आवश्यक है।	
उद्देश्य	1. अस्मितामूलक विमर्शों से परिचित कराना। 2. कविताओं द्वारा स्त्री विमर्श से जुड़े प्रश्नों से अवगत कराना। 3. आत्मकथा द्वारा दलित विमर्श से परिचित कराना। 4. उपन्यास द्वारा किन्नर विमर्श को ज्ञात कराना।	
 पाठ्यविषय	1. अस्मितामूलक विमर्श: अवधारणा, स्वरूप एवं महत्व	घंटे 10
	स्त्री विमर्श, दलित विमर्श, आदिवासी विमर्श, किन्नर विमर्श, अल्पसंख्यक विमर्श, किसान विमर्श, वृद्धावस्था विमर्श और पर्यावरण विमर्श।	
	2. स्त्री विमर्श : अवधारणा, स्वरूप एवं आंदोलन	10
	- विशेष अध्ययन- स्त्री विमर्श पर चयनित कविताएं ➤ कैद अपनी ही- स्नेहमयी चौधरी ➤ जब मैं स्त्री हूँ- रंजना जयसवाल ➤ खामोश रहनेवाली लड़कियाँ- हरप्रीत कौर ➤ पिता के घर में मैं- रुपम मिश्र ➤ कमाल की औरतें- शैलजा पाठक ➤ आप गुलाब कहते हैं जिन्हें- नाज़िश अंसारी ➤ एक औरत की पुकार- मनीषा कुलश्रेष्ठ ➤ बेजगह- अनामिका	
	3. दलित विमर्श : अवधारणा, स्वरूप एवं आंदोलन	20
	विशेष अध्ययन के लिए आत्मकथा: जूठन-ओमप्रकाश वाल्मीकि	
	4. किन्नर विमर्श : अवधारणा, स्वरूप एवं आंदोलन	20
	विशेष अध्ययन- के लिए उपन्यास तीसरी ताली- प्रदीप सौरभ	
अध्यापन पद्धति	व्याख्या, कथा-कथन, समस्या निर्मूलन, दृश्य-श्रव्य प्रस्तुति, प्रश्न-मंजूषा, समूह चर्चा, अध्ययन भ्रमण।	
आधार ग्रंथ	1. जूठन-ओमप्रकाश वाल्मीकि, राधाकृष्ण प्रकाशन, 2015 2. तीसरी ताली- प्रदीप सौरभ, वाणी प्रकाशन, 2011	

संदर्भ ग्रंथ सूची	3. जगदीश्वर चतुर्वेदी, स्त्रीवादी साहित्य विमर्श, मेधा पब्लिशिंग हाउस, 2018 4. अनामिका, स्त्री विमर्श का लोकपक्ष, वाणी प्रकाशन, 2017 5. राजकमल प्रकाशन, 2011 6. डॉ. हरिनारायण ठाकुर, दलित साहित्य का समाजशास्त्र, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, 2009 7. ओमप्रकाश वाल्मिकी, दलित साहित्य का सौंदर्यशास्त्र, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, सं 2001 8. बजरंग बिहारी तिवारी, दलित साहित्य: एक अंतर्गतात्रा, नवारुण, गाज़ियाबाद, सं 2015 9. डॉ. दिलिप मेहरा (सं), हिंदी साहित्य में किन्नर विमर्श, वाणी प्रकाशन, 2019 10. सफलता सरोज (सं), किन्नर विमर्श: कल, आज और कल, अमन प्रकाशन, 2019 11. रमणीका गुप्ता (सं), आदिवासी समाज और साहित्य, कल्याणी शिक्षा परिषद, नई दिल्ली, सं. 2016 12. सं. मनोहर भंडारे, इक्कीसवीं सदी के विविध विमर्श, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, 2023
अधिगम परिणाम	1. अस्मितामूलक विमर्शों से परिचित होंगे। 2. कविताओं द्वारा स्त्री विमर्श से जुड़े प्रश्नों से अवगत होंगे। 3. आत्मकथा द्वारा दलित विमर्श से परिचित होंगे। 4. उपन्यास द्वारा किन्नर विमर्श से ज्ञात होंगे।

कार्यक्रम : स्नातक हिंदी MAJOR COURSE
 पाठ्यक्रम : HIN- 302
 पाठ्यक्रम का शीर्षक: रचनात्मक लेखन(CREATIVE WRITING)
 श्रेयांक : 04
 शैक्षणिक वर्ष से लागू : 2025-26

पाठ्यक्रम के लिए पूर्वापेक्षित	वाचन एवं लेखन में रुचि होना अपेक्षित है।	
उद्देश्य	1. रचनात्मक लेखन के विविध प्रकारों से परिचित कराना। 2. रचनात्मक लेखन-कौशल का विकास कराना। 3. रचनात्मक लेखन के लिए प्रेरित कराना। 4. रोजगार की दृष्टि से रचनात्मक लेखन के क्षेत्र में सक्षम बनाना।	
पाठ्य विषय		घंटे
	1. रचनात्मक लेखन • अवधारणा एवं स्वरूप • रचनात्मक लेखन- विविध क्षेत्र • जनसंचार माध्यम (प्रिन्ट एवं इलेक्ट्रॉनिक) (रचनात्मक लेखन के प्रकार – मौखिक-लिखित, गद्य-पद्य, पाठ्य-नाट्य आदि।)	10
	2. रचनात्मक लेखन : पद्य • कविता • गीत • गज़ल	15
	3. रचनात्मक लेखन: गद्य • कहानी • एकांकी • निबंध • पुस्तक समीक्षा • यात्रा-वृत्तांत	20
	4. रचनात्मक लेखन : जनसंचार माध्यम • प्रिन्ट मीडिया • इलेक्ट्रॉनिक मीडिया • सोशल मीडिया • विज्ञापन • रिपोर्टाज • फिल्म समीक्षा	15
अध्यापन विधि	व्याख्यान, सामूहिक चर्चा, स्वाध्याय, संगोष्ठी, दृश्य-श्रव्य प्रस्तुति, कार्यशाला	

संदर्भ ग्रंथ सूची	1. राजेश जोशी- एक कवि की नोटबुक, राजकमल प्रकाशन, सं.2004 2. कुमार विमल(सं) - काव्य रचना प्रक्रिया, बिहार हिन्दी ग्रंथ अकादमी, पटना , सं. 1974 3. डॉ.चंद्रप्रकाश मिश्र- मीडिया लेखन- सिद्धांत एवं व्यवहार, संजय प्रकाशन, दिल्ली,सं.2003 4. रमेश गौतम(सं)- रचनात्मक लेखन, भारतीय ज्ञानपीठ, सं. 2016 5. शुक्ल रामचंद्र, चिंतामणी भाग 1, 2, काशी प्रचारणी सभा,
अधिगम परिणाम	1. रचनात्मक लेखन के विविध प्रकारों से परिचित होंगे। 2. रचनात्मक कौशल विकसित होगा। 3. रचनात्मक लेखन के लिए प्रेरित होंगे। 4. रोजगार की दृष्टि से रचनात्मक लेखन के क्षेत्र में सक्षम बनेंगे।



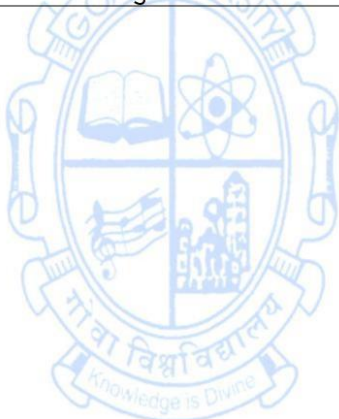
कार्यक्रम : स्नातक हिंदी MAJOR COURSE
 पाठ्यक्रम : HIN-303
 पाठ्यक्रम का शीर्षक : हिंदी आत्मकथा साहित्य (HINDI AUTOBIOGRAPHY LITERATURE)
 श्रेयांक : 02
 शैक्षणिक वर्ष से लागू : 2025-26

पाठ्यक्रम के लिए पूर्वापेक्षित	हिंदी के आत्मवृत्तांत की जानकारी आवश्यक है।	
उद्देश्य	- आत्मकथा विधा से परिचित कराना। - आत्मकथाके स्वरूप एवं अवधारणासे परिचित कराना। - हिन्दी आत्मकथा के इतिहास से अवगत कराना। - आत्मकथा के माध्यम से लेखक के जीवन और परिवेश से ज्ञात कराना।	
पाठ्य विषय	1. हिंदी आत्मकथा: अवधारणा एवं स्वरूप	घंटे 15
	- आत्मकथा की परिभाषा - आत्मकथा के तत्व - आत्मकथा का इतिहास	
	2. विशेष अध्ययन के लिए निर्धारित आत्मकथा	15
	सुनहु तात यह अकथ कहानी -शिवानी	
अध्यापन पद्धति	व्याख्या, मंजूषा-प्रश्न, श्रव्य प्रस्तुति-दृश्य, समस्या निर्मूलन, कथन-कथा, समूह चर्चा।	
आधार ग्रंथ	सुनहु तात यह अकथ कहानी 2007, दिल्ली, राधाकृष्ण प्रकाशन, शिवानी -	
संदर्भ ग्रंथ	- विश्वबन्धु शास्त्री विद्यालंकार -हिन्दी का आत्मकथा साहित्य, राधा प्रकाशन, दिल्ली, 1984 - डॉ. बापुराव देसाई, हिंदी आत्मकथा विधा शास्त्र और इतिहास, गरिमा प्रकाशन, कानपुर, 2011 - डॉ. सरजूप्रसाद मिश्र, हिंदी लेखिकाओं की आत्मकथाएँ, अमन प्रकाशन, कानपुर, 2011 - डॉ. रघुनाथ गणपति देसाई -महिला आत्मकथा लेखन में नारी, ए.बी.एस पब्लिकेशन, वाराणसी, 2012 - डॉ. क्रॉति गायकवाड, समकालीन आत्मकथा और नारी जीवन, अन्नपूर्णा प्रकाशन, कानपुर, 2009	
अधिगम परिणाम	- आत्मकथा विधा से परिचित होंगे। - आत्मकथाके स्वरूप एवं अवधारणा को जानेगें। - हिन्दी आत्मकथा के इतिहास से अवगत होंगे। - आत्मकथा के माध्यम से लेखक के जीवन और परिवेश से अवगत होंगे।	

कार्यक्रम : स्नातक हिंदी Minor Course (VET)
 पाठ्यक्रम : HIN-321
 पाठ्यक्रम का शीर्षक : जनसंचार एवं पत्रकारिता (Media & Journalism)
 श्रेयांक : 4 (3T+1P)
 शैक्षणिक वर्ष से लागू : 2025-26

पाठ्यक्रम के लिए पूर्वापेक्षित	हिंदी भाषा जनसंचार एवं पत्रकारिता का सामान्य ज्ञान अपेक्षित है।	
उद्देश्य	1. संचार और जनसंचार की अवधारणा से परिचित कराना। 2. जनसंचार के विविध माध्यम तथा महत्वको समझाना। 3. पत्रकारिता की अवधारणा से अवगत कराना। 4. समाचार लेखन एवं प्रस्तुतीकरणकौशलका व्यावहारिक प्रयोग करना।	
पाठ्य विषय		घंटे
	1. जनसंचार माध्यम: अवधारणा एवं स्वरूप • संचार: परिभाषा एवं प्रकार • जनसंचार: परिभाषा, तत्व एवं प्रकार • जनसंचार विशेषताएं एवं महत्व	15
	2. जनसंचार के विविध माध्यम • मुद्रित माध्यम: स्वरूप, महत्व एवं भेद • इलेक्ट्रॉनिक माध्यम: स्वरूप, महत्व एवं भेद	15
	3. पत्रकारिता: अवधारणा एवं स्वरूप • पत्रकारिता: परिभाषा, वर्गीकरण एवं महत्व • हिंदी पत्रकारिता: उद्भव एवं विकास • समाचारपत्र: स्रोत एवं प्रकाशन प्रक्रिया	15
	4. व्यावहारिक प्रयोग: • समाचार लेखन एवं प्रस्तुति • दूरदर्शन न्यूज बुलेटिन लेखन एवं प्रस्तुति • फ्रीचर लेखन • संपादन	30
अध्यापन विधि	व्याख्यान, अतिथि व्याख्यान, सामूहिक चर्चा, प्रत्यक्ष समाचार लेखन एवं प्रस्तुतीकरण	
	1. डॉ. शम्भूनाथ द्विवेदी, जनसंचार और विविध माध्यम, पूजा पब्लिकेशन्स, कानपुर 2021	

संदर्भ ग्रंथ	2. डॉ. जय प्रकाश पांडेय, आधुनिक जनसंचार माध्यमों में हिंदी, परिक्रमाप्रकाशन, दिल्ली-2014 3. ग्रे. सुजाला वर्मा, जी. पी. वर्मा, जनसंचार जनसंपर्क एवं विज्ञापन, ज्ञानोदयप्रकाशन, कानपुर 4. एन. सी. पंत, हिंदी पत्रकारिता का विकास, राधा पब्लिकेशन्स, दरियागंज, नई दिल्ली, 2001 5. अनिल सिन्हा, हिंदी पत्रकारिता इतिहास, स्वरूप एवं संभावनाएं, कनिष्कपब्लिशर्स, डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली-110002 6. गणेश मंत्री, पत्रकारिता की चुनौतिया, सत्साहित्य प्रकाशन, दिल्ली
अधिगम परिणाम	1. संचार और जनसंचार की अवधारणा से परिचित होंगे। 2. जनसंचार के विविध माध्यम तथा महत्वको समझेंगे। 3. पत्रकारिता की अवधारणा से अवगत होंगे। 4. समाचार लेखन एवं प्रस्तुतीकरणकौशलका व्यावहारिक प्रयोग करेंगे।

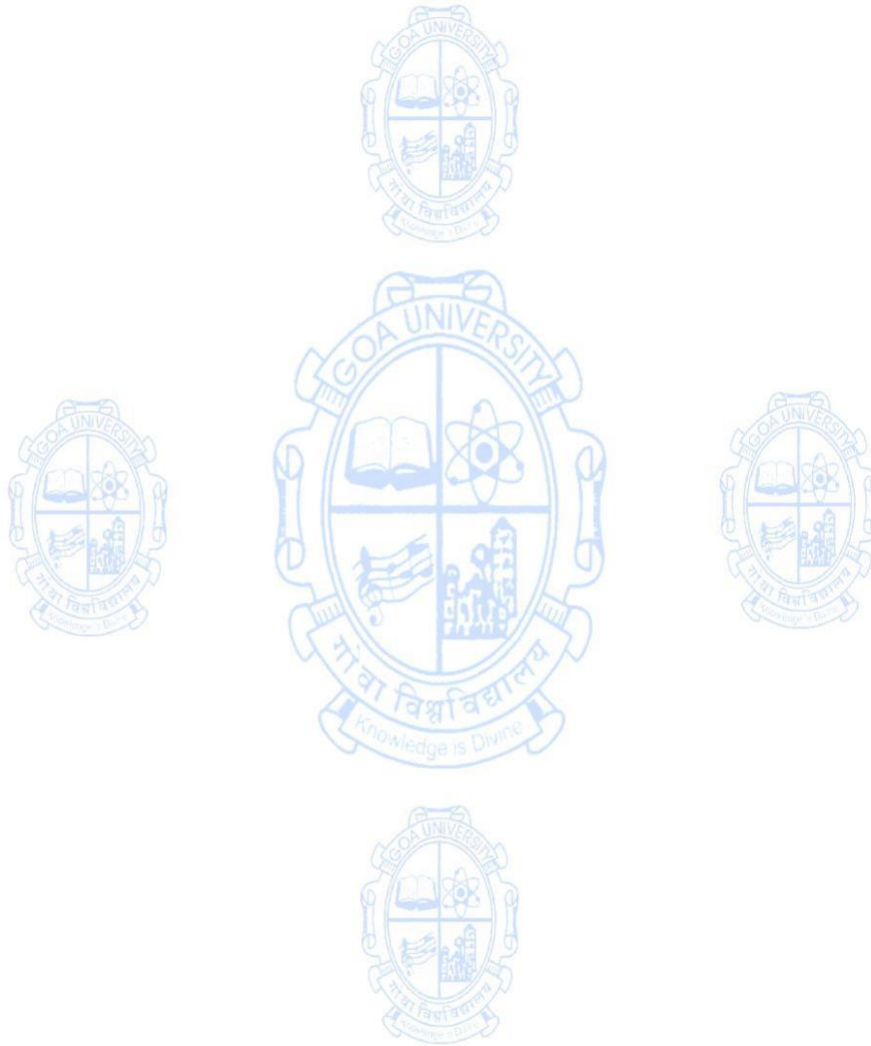


कार्यक्रम : स्नातक हिंदी MAJOR COURSE
 पाठ्यक्रम HIN-304
 पाठ्यक्रम का शीर्षक : हिंदी साहित्य का इतिहास : आधुनिक काल (HISTORY OF HINDI LITERATURE: AADHUNIK KAL)
 श्रेयांक : 4
 शैक्षणिक वर्ष से लागू : 2025-26

पाठ्यक्रम के लिए पूर्वापेक्षित	आधुनिक हिंदी साहित्य की जानकारी आवश्यक है।	
उद्देश्य	1. आधुनिक काल की परिस्थितियों से अवगत कराना। 2. आधुनिक काल के विकास क्रम से परिचित कराना। 3. आधुनिक काल के कवियों से परिचित कराना। 4. रचनाओं के माध्यम से राजेश जोशी की काव्यदृष्टि से अवगत कराना।	
विषयवस्तु	1. आधुनिक हिंदी काव्य का परिवेश	घंटे 10
	- नवजागरण एवं समाज-सुधार आंदोलन - आधुनिक काल की सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक एवं आर्थिक परिस्थितियाँ (1857-1947)	20
	2. आधुनिक हिंदी काव्य: सामान्य प्रवृत्तियाँ - भारतेन्दुयुग - द्विवेदीयुग - छायावाद - प्रगतिवाद - प्रयोगवाद - नईकविता - समकालीन कविता	10
	3. प्रमुख रचनाकार- सामान्य परिचय भारतेन्दुहरिचन्द्र, मैथिलीशरणगुप्त, सुभद्राकुमारी चौहान, जयशंकरप्रसाद, सुमित्रानंदन पंत, सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', महादेवी वर्मा, नागार्जुन, दिनकर, अज्ञेय, मुक्तिबोध, शमशेरबहादुरसिंह, कात्यायनी, आलोक धन्वा।	

	4. राजेश जोशी की चयनित कविताएँ : 1. बिजली सुधारनेवाले 2. मेंड जाऊंगा 3. यह धर्म के विरुद्ध है 4. प्लेटफार्म पर 5. बच्चे काम पर जा रहे हैं 6. प्रजापति 7. मारे जाएंगे 8. मेरठ 87 9. नाना की साइकिल 10. झाड़ू की नीति कथा 11. इत्यादि 12. बीसवीं सदी के अंतिम दिनों का एक आश्चर्य 13. उसकी गृहस्थी 14. उस प्लंबर का नाम क्या है, 15. प्रतिध्वनि 16. हमारे शहर की गलियाँ : दो 17. बर्बर सिर्फ बर्बर थे 18. मैं झुकता हूँ 19. रात किसी का घर नहीं 20. यह स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है।	20
अध्यापन विधि	व्याख्यान, सामूहिक चर्चा, संगोष्ठी, कार्यशाला।	
आधार ग्रंथ	कविनेकहा, राजेश जोशी, किताब घर प्रकाशन, नई दिल्ली 2011	
संदर्भ ग्रंथ	1. शुक्ल, रामचन्द्र, हिंदी साहित्य का इतिहास, नागरी प्रचारणी सभा, सं-52, 2020 2. बच्चन सिंह: हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, 2017 3. नगेंद्र : हिन्दी साहित्य का इतिहास, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 200 4. हजारीप्रसाद द्विवेदी : हिन्दी साहित्य : उद्भव और विकास, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2017 5. वासुदेव सिंह : हिन्दी साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास, संजय बुक सेंटर, वाराणसी 6. नंदकिशोर नवल : समकालीन काव्ययात्रा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2014 7. सं. लीलाधर मंडलोई : कविता के सौ बरस, शिल्पायन प्रकाशन, नई दिल्ली, 2008	

अधिगम परिणाम	1. आधुनिक काल की परिस्थितियों से अवगत होंगे। 2. आधुनिक काल के विकास क्रम से परिचित होंगे। 3. आधुनिक काल के कवियों से परिचित होंगे। 4. रचनाओं के माध्यम से राजेश जोशी की काव्यदृष्टि से अवगत होंगे।
-----------------	---



सत्र : VI

कार्यक्रम : स्नातक हिंदी MAJOR COURSE

पाठ्यक्रम : HIN – 305

पाठ्यक्रम का शीर्षक : भारतीय साहित्य (Indian Literature)

श्रेयांक : 4 (60)

शैक्षणिक वर्ष से लागू : 2025-26

पाठ्यक्रम के लिए पूर्वापेक्षित	भारतीय साहित्य की जानकारी आवश्यक है।	
उद्देश्य	1. भारतीय साहित्य की अवधारणा से परिचित कराना । 2. भारतीय साहित्य के माध्यम से विविध संस्कृतियों से अवगत कराना। 3. भारतीय साहित्यकारों की विचारधारा से परिचित कराना। 4. निर्धारित रचनाओं के अध्ययन द्वारा भारतीयता की मूल संवेदना से जोड़ना।	
पाठ्यविषय	1. भारतीय साहित्य - अवधारणा, स्वरूप एवं विशेषताएँ। - भारतीय साहित्य के अध्ययन की समस्याएँ।	घंटे 10
	2. भारतीय कथा साहित्य कहानी फाँसी – एम. सुकुमारन (मलयालम) अढ़ाई घंटे- हरिकृष्ण कौल (कश्मीरी) मैं- दो – विभूत शाह (गुजराती) कसम- दामोदर मावज़ो (कोंकणी) सुदामा का पता – तरुणकांति मिश्र (उड़िया) उपन्यास भू- देवता- केशव रेड्डी (तेलगु)	20
	3. अमृता प्रीतम की चयनित कविताएँ (पंजाबी) - मैं तुम्हें फिर मिलूँगी - मुलाकात - मरुस्थल की लीला - शहर - मेरा पता - ऐ मेरे दोस्त! मेरे अजनबी - राजनीति - मजबूर - धूप का टुकड़ा - मैंने पल भर के लिए	15

	4. नाटक गिद्ध- विजय तेंडुलकर (मराठी)	15
अध्यापन विधि	व्याख्यान, सामूहिक चर्चा, संगोष्ठी, दृश्य-श्रव्य प्रस्तुति आदि।	
आधार ग्रंथ	- भू- देवता- केशव रेड्डी, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 2019 - गिद्ध – वसंतदेव देसाई, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, 2018 - मैं तुम्हें फिर मिलूँगी, अमृता प्रीतम, कृति प्रकाशन, 2014 - भारतीय श्रेष्ठ कहानियाँ, सं. सन्हैयालाल ओझा और मार्कण्डेय, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2010	
संदर्भ ग्रंथ	- डॉ.नगेंद्र, भारतीय साहित्य, प्रभात प्रकाशन, सं.2018 - रामछबीला त्रिपाठी- भारतीय साहित्य, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, सं.2014 - मूलचंद गौतम(सं)-भारतीय साहित्य, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, सं.2009 - डॉ.सियाराम तिवारी (सं.), भारतीय साहित्य की पहचान, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, सं.2015	
अधिगम परिणाम	- भारतीय साहित्य की अवधारणा से परिचित होंगे। - भारतीय साहित्य के माध्यम से विविध संस्कृतियों से अवगत होंगे। - भारतीय साहित्यकारों की विचारधारा से परिचित होंगे। - भारतीयता की मूल संवेदना से जुड़ेंगे।	

कार्यक्रम : स्नातक हिंदी MAJOR COURSE
 पाठ्यक्रम : HIN – 306
 पाठ्यक्रम का शीर्षक : साहित्य : विचार एवं दर्शन (Literature : Thought and Philosophy)
 श्रेयांक : 4
 शैक्षणिक वर्ष से लागू : 2025-26

पाठ्यक्रम के लिए पूर्वापेक्षित	साहित्य-विचार और दर्शन का परिचय होना अपेक्षित है।	
उद्देश्य	1. साहित्य- विचार एवं दर्शन से अवगत कराना। 2. भारतीय एवं पाश्चात्य दर्शन से प्रभावित साहित्य से परिचित कराना। 3. दर्शनशास्त्र, साहित्य और विचारधारा का अध्ययन कराना। 4. साहित्य के माध्यम से मानवीय मूल्यों से परिचित कराना।	
पाठ्यविषय	1. भारतीय दर्शन : परिचयात्मक अध्ययन - वेद एवं उपनिषद - अद्वैतवाद, द्वैतवाद, विशिष्टाद्वैतवाद, शुद्धाद्वैतवाद, द्वैताद्वैतवाद - जैन दर्शन - बौद्ध दर्शन - गांधी दर्शन	घंटे 15
	2. भारतीय दर्शन पर आधारित रचनाएँ - कबीर के 5 दोहे (चयनित दोहे) - जाके मुँह माथा नहीं, नाहीं रूप कुरूप। - जल में कुम्भ कुम्भ में जल है बाहर भीतर पानी। - कबीर माया मोहनी, मोहे जाँण सुजाँण। - कबीर यह जग कुछ नहीं, षिन पारा षिन मीठ। - कबीर ऐसा यह संसार है, जैसा सैंबल फूल - सूरदास के 5 पद (चयनित पद) (सूरसागर संपादक नंददुलारे वाजपेयी (दूसरा खंड) दशम स्कंध पृष्ठ संख्या 1461) - स्यामा स्याम छबि की साथ 2140 2758 - हम तुम सो बिनति करै, जनि आँखिनि भरौ गुलाल 2884 3502 - कहा इन नैननि कौ अपराध 3252 3870 4- - ऊधौ जोग जोग कहत , कहा जोग कीए 3702 43205- - हरि रस तौ ब्रजवासी जानै 4049 4667	15

	• रामकुमार वर्मा - एकांकी - चारुमित्रा	
	3. पाश्चात्य दर्शन : परिचयात्मक अध्ययन • मार्क्सवाद • मनोविज्ञान • अस्तित्ववाद • उत्तर-आधुनिकतावाद	15
	4. पाश्चात्य दर्शन पर आधारित रचनाएँ • प्रतिबद्ध हूँ - नागार्जुन • हीली-बोन की बत्तखें - अज्ञेय • अंतराल - निर्मल वर्मा	15
अध्यापन विधि	व्याख्यान, सामूहिक चर्चा, संगोष्ठी, दृश्य-श्रव्य प्रस्तुति आदि।	
आधार ग्रंथ	1. हजारी प्रसाद द्विवेदी, कबीर- राजकमल प्रकाशन, 2019 2. सूरसागर संपादक नंददुलारे वाजपेयी (दूसरा खंड) दशम स्कंध पृष्ठ संख्या 1461 3. गोस्वामी तुलसीदास, रामचरितमानस - गीता प्रेस गोरखपुर 2021. 4. सूरसागर- लोकभारती प्रकाशन 2018 5. पउम चरित - स्वयंभू डा एच सी भायाणी अनुवाद डा देवेन्द्र कुमार जैन भारतीय ज्ञानपीठ नयी दिल्ली 1957 6. देशद्रोही - यशपाल लोकभारती प्रकाशन 1943 7. डा. रामकुमार वर्मा रचनावली ,उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थानलखनऊ 2011 8. अज्ञेय संपूर्ण कहानियाँ, राजपाल प्रकाशन, 2008 9. कच्चे और काला पानी - निर्मल वर्मा भारतीय ज्ञानपीठ, नयी दिल्ली 2009 10. सूखा तथा अन्य कहानियाँ- निर्मल वर्मा, राजकमल प्रकाशन 1995	
संदर्भ ग्रंथ	1. डा.सर्वपल्ली राधाकृष्णन,भारतीय दर्शन भाग 1 तथा भाग 2, राजपालप्रकाशन, 2015 2. डॉ निर्मला जैन,काव्य चिंतन की पश्चिमी परम्परा ,वाणी प्रकाशन,नई दिल्ली 1990 3. डॉ तारकनाथ बाली,पाश्चात्य काव्यशास्त्र ,वाणी प्रकाशन,नई दिल्ली 2024 4. जगदीश्वर चतुर्वेदी,उत्तर आधुनिकतावाद,स्वराज प्रकाशन ,नई दिल्ली 2004	
अधिगम परिणाम	1. साहित्य- विचार एवं दर्शन से अवगत होंगे। 2. भारतीय एवं पाश्चात्य दर्शन से प्रभावित साहित्य से परिचित होंगे। 3. दर्शनशास्त्र और साहित्य का अध्ययन करेंगे। 4. साहित्य के माध्यम से मानवीय मूल्यों से परिचित होंगे।	

कार्यक्रम : स्नातक हिंदी MINOR COURSE (VET)
 पाठ्यक्रम : HIN-322
 पाठ्यक्रम का शीर्षक : साहित्य और सिनेमा (Literature and Cinema)
 श्रेयांक : 04 (3L+1P)
 शैक्षिक वर्ष से लागू : 2025-2026

पाठ्यक्रम के लिए पूर्वापेक्षित	साहित्य के प्रति रुचि तथा सिनेमा का सामान्य ज्ञान होना अपेक्षित है।	
उद्देश्य	1. साहित्य और सिनेमा के स्वरूप तथा संबंध से परिचित कराना। 2. हिंदी सिनेमा के विकास तथा सिनेमा की निर्माण प्रक्रिया से अवगत कराना। 3. सिनेमा में साहित्य के सरोकारों को सोदाहरण समझाना। 4. साहित्य के फिल्मांतरण के व्यावहारिक पक्ष से अवगत कराना।	
		घंटे
पाठ्य विषय	1. साहित्य और सिनेमा • साहित्य का स्वरूप • सिनेमा का स्वरूप • सिनेमा की तकनीकी शब्दवली • साहित्य और सिनेमा- साम्य एवं वैषम्य • सिनेमा में साहित्य - कहानी, पटकथा, संवाद, गीत, फिल्म समीक्षा	15
	2. हिंदी सिनेमा का उद्भव एवं विकास तथा फिल्म- निर्माण प्रक्रिया • हिंदी सिनेमा का उद्भव एवं विकास- साहित्यिक कृतियों पर आधारित फिल्मों का उल्लेख अपेक्षित है। • फिल्म-निर्माण प्रक्रिया - निर्माण-पूर्व - कथा विकास – विचार, कहानी, पटकथा, संवाद - निर्माण - उत्तर-निर्माण - वितरण एवं प्रदर्शन	15
	3. साहित्य का फिल्मांतरण • पाठ का दृश्य श्रव्य माध्यम के लिए रूपांतरण - रूपांतरण की प्रक्रिया - रूपांतरण की चुनौतियाँ • साहित्यिक कृतियों पर आधारित फिल्मों का अध्ययन - काबुलीवाला (रवींद्रनाथ ठाकुर की कहानी पर आधारित) (1961)	15

	- गाइड (आर.के.नारायण के उपन्यास पर आधारित) (1965) - सद्गति (प्रेमचंद की कहानी पर आधारित) (1981) - परिणीता(शरतचंद्र चट्टोपाध्याय के उपन्यास पर आधारित) (2005) - आँकारा (विलियम शेक्सपियर के नाटक पर आधारित) (2006) • प्रमुख हिंदी गीतकार – - साहिर लुधियानवी (प्यासा, कभी-कभी) - शैलेंद्र (अनाड़ी, गाइड) - गुलजार (आँधी, इजाजत)	
	4. व्यावहारिक प्रयोग - सिनेमा आस्वादन (पाठ्यक्रम में चयनित फिल्मों के संदर्भ में) - पाठ पर आधारित पटकथा लेखन - संवाद लेखन - साहित्यिक कृति पर आधारित लघु- फिल्म निर्माण	30
अध्यापन विधि	व्याख्यान , चर्चा, दृश्य-श्रव्य प्रस्तुतीकरण, व्यावहारिक प्रयोग, तकनीकी विशेषज्ञों द्वारा मार्गदर्शन	
संदर्भ ग्रंथ	1. ओझा अनुपम, भारतीय सिने सिद्धांत, राधाकृष्ण प्रकाशन, 2009 2. वजाहत असगर , व्यावहारिक निर्देशिका-पटकथा लेखन, राजकमल प्रकाशन, 2011 3. अग्रवाल प्रह्लाद, हिंदी सिनेमा आदि से अनन्त, साहित्य भंडार, इलाहाबाद, 2014 4. (सं)मृत्युंजय,सिनेमा के सौ वर्ष, शिल्पायन प्रकाशन, दिल्ली, 2008 5. भारद्वाज विनोद, सिनेमा कल, आज और कल, वाणी प्रकाशन, 2006 6. दुबे विवेक, हिंदी साहित्य और सिनेमा, संजय प्रकाशन , नई दिल्ली, 2009 7. कुमार हरीश, सिनेमा और साहित्य, संजय प्रकाशन, दिल्ली, 2010 8. क्षीरसागर गोकुल, सिनेमा और फिल्मांतरित हिन्दी साहित्य, विकास प्रकाशन कानपुर, 2023	
अधिगम परिणाम	1. सिनेमा और साहित्य के स्वरूप तथा संबंध से परिचित होंगे। 2. हिंदी सिनेमा के विकास तथा निर्माण-प्रक्रिया को जानेंगे। 3. सिनेमा में साहित्य के सरोकारों को सोदाहरण समझेंगे। 4. साहित्य के फिल्मांकन की प्रक्रिया, फिल्म-निर्माण तथा फिल्म-आस्वादन के व्यावहारिक पक्ष से अवगत होंगे।	